दिनांक :- 14-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा
लेखक का नाम - डॉ० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)
स्नातक :- द्वितीय खंड प्रतिष्ठा इतिहास
तृतीय पत्र
इकाई :- एक - पूर्व मध्यकाल और भारत का विकेन्द्रीकृत स्वरूप

भारत के राजनीतिक इतिहास में गुप्त वंश के पतन के पश्चात् विकेन्द्रीकरण एंव क्षेत्रीयता की भावना का आविर्भाव हुआ। गुप्ता के पतन के पश्चात् अनेक नए वंशों का उदय हुआ। जिनमें वल्लभी के मैत्रक, पंजाब के हूण, मालवा और मगध के उत्तर गुप्त, कन्नौज के मौखरी तथा थानेश्वर के पुष्यभूति वंश प्रमुख थे।

पुष्य भूति वंश :- छठी सदी के उत्तरार्द्ध एंव सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध शक्ति का उद्भव हुआ। इस वंश का संस्थापक पुष्यभूति तथा सर्वाधिक महान शासक हर्षवर्द्धन था। ये सम्भवतः गुप्तो के अधीनस्थ सामन्त या अधिकारी थे हर्षवर्द्धन के मधुबन, बाँसखेड़ा, सोनीपत तथा नालंदा

Scanned with CamScanner

से प्राप्त अभिलेख इस वंश की जानकारी के महत्वपूर्ण स्त्रोत है।
बाणभट्ट एवं ह्वेनसांग के विवरण से भी हर्षकालीन भारत के राजनीतिक सामाजिक जीवन की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। अभिलेखों में पुष्यभूति का नाम नही मिलता है, लेकिन हर्ष के पूर्व के चार शासकों - नरवर्द्धन, राज्यवर्द्धन, आदित्यवर्द्धन एवं प्रभाकरवर्द्धन के नामों का उल्लेख मिलता है।

वर्द्धन वंश की शक्ति और प्रतिष्ठा का संस्थापक प्रभाकर वर्द्धन था। उसकी उपाधियाँ परममट्टारक और महाराजाधिराज से स्पष्ट होता है कि वह एक सार्वभौम और शक्तिशाली राजा था। हर्षचरित्र में प्रभाकरवर्द्धन को "हूण हरिण केसरी कहा गया है। इसकी प्रधान रानी यशोमती थी। अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए इसने मौखरि वंश के शासक ग्रहवर्मा के साथ अपनी पुत्री राज्यश्री

का विवाह किया। प्रभाकरवर्द्धन के पश्चात् राज्यवर्द्धन शासक बना। इसके समय कन्नौज में मौखरि शासक ग्रहवर्मा की हत्या मालवराज देव गुप्त ने कर दी। अपनी बहन राज्यश्री को बचाने के प्रयास में राज्यवर्द्धन की मालवराज देवगुप्त एवं गौड़ शासक शशांक द्वारा मिल कर हत्या कर दी गई तथा राज्यश्री को कन्नौज में गिरफ्तार कर लिया गया।

हर्षवर्द्धन

हर्षवर्द्धन (606-647ई.) विकट परिस्थिति में थानेश्वर का राजा बना। मालवा के शासक देवगुप्त ने बंगाल के शासक शशांक के साथ मिलकर कन्नौज के शासक तथा हर्षवर्द्धन की बहन राज्यश्री के पति ग्रहवर्मा की हत्या कर दी थी तथा राज्यश्री को कारागार में डाल दिया था। इसका बदला लेने तथा राज्यश्री को मुक्त कराने के लिए भए हर्ष के बड़े भाई तथा थानेश्वर के शासक

राज्यवर्द्धन की भी शशांक ने धोखे से हत्या कर दी! इस विकट स्थिति में हर्ष ने राज्यभार सम्भाला तथा राज्यश्री की सहमति से हर्ष कन्नौज का भी शासक बना गया। हर्ष ने राजधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थानान्तरित किया हर्ष ने गौड़ शासक शशांक को पराजित किया था। काम रूप के शासक भास्करवर्मन और मागध के शासक माधवगुप्त से इसने मित्रता स्थापित कर ली! नर्मदा नदी के किनारे हर्ष और चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के बीच 632 ई० में संघर्ष हुआ था! ह्वेनसांग के विवरण और ऐहोल अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस युद्ध में सम्भवतः हर्ष की हार हुई थी, परंतु बाण ने हर्ष की पराजय का उल्लेख नहीं किया है। हर्ष ने कश्मीर पर आक्रमण कर वहाँ से संघराम में स्थापित किया था!

Scanned with CamScanner

बाण भट्ट एवं ह्वेनसांग दोनों कश्मीर और नेपाल पर हर्ष के अधिपत्य को स्वीकार करते हैं! हर्ष के साम्राज्य में उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, असम और उड़ीसा के अतिरिक्त कश्मीर, पंजाब पश्चिमोत्तर के राज्य एवं नेपाल शामिल थे! ह्वेनसांग मालवा, वल्लभी, गुर्जर तथा सिंध पर भी हर्ष के आधिपत्य की पुष्टि करता है! चीन के साथ भी हर्ष ने मैत्री पूर्ण सम्बंध स्थापित किए तथा 641 ई० में अपना राजदूत चीन भेजा! चीन से दो मिशन 641 ई० में लियांग-होई-किंग के नेतृत्व में तथा 643 ई० में लि-यि-प्यिओ के नेतृत्व में भारत आए!

ह्वेनसांग - यात्रा विवरण

चीनी यात्री ह्वेनसांग नालंदा महाविहार में पढ़ने के लिए और भारत से बौद्ध ग्रंथों को ले जाने के लिए 630 ई० में स्थलमार्ग से भारत आया। ह्वेनसांग के भारत आगमन के समय चीन का शासक ताई-सुंग था! भारत से

वह 645 ई० में चीन लौट गया। इस अवधि में उसने हर्ष के दरबार में कई वर्ष बिताए और भारत के प्रमुख नगरों, बौद्ध केन्द्रों, स्तूपों और महाविहारों का भ्रमण किया। भारत को वह यिन तु कहकर पुकारता है। चीन लौटकर उसने 'पाश्चात्य संसार के लेख' (सी-यूकि) नामक पुस्तक में भारत के संदर्भ में विस्तृत विवरण दिया है। ह्वेनसांग की जीवन उसके सहयोगी ह्वी-ली ने लिखी है।

थानेश्वर में उसने जयगुप्त नामक बौद्ध विद्वान से शिक्षा प्राप्त की। 637 ई० में वह नालंदा पहुँचा। उस समय नालंदा विश्वविद्यालय की आचार्य शीलभद्र थे। वल्लभी के शासक ध्रुव सेन को वह हर्ष का दामाद तथा सिंध के राजा को शूद्र बताता है। उसने कन्नौज की धर्मसभा तथा प्रयाग की छठी महामोक्ष परिषद में भाग लिया। ह्वेनसांग के अनुसार हर्ष समस्त भारत का स्वामी था, जो प्रजा के हित में शासन

करता था। ह्वेनसांग ने हर्ष को शीलादित्य कहा था।
ह्वेनसांग के अनुसार ब्राह्मण धर्म अनेक शाखाओं में विभक्त था। बालकों की शिक्षा सात वर्ष की आयु से प्रारम्भ होती है बौद्ध विहारों के अतिरिक्त गुरुकुलों में भी शिक्षा दी जाती थी उसके अनुसार वर्णमाला में 47 संख्या अक्षर होते थे। शिक्षा का विश्वविख्यात केन्द्र नालंदा महाविहार था, जहाँ चीन, जापान तिब्बत, श्रीलंका इत्यादि जगहों पर विद्वान अध्ययन के लिए आते थे। नालंदा विश्वविद्यालय का भरण-पोषण 100 गाँवों के राजस्व से होता था। वल्लभी शिक्षा का दूसरा विख्यात केन्द्र था।

प्रशासनिक व्यवस्था :-

हर्ष ने गुप्तों द्वारा स्थापित मूल प्रशासनिक व्यवस्था को बनाए रखा, परंतु आवश्यकता अनुसार इनमें संशोधन एवं परिवर्तन भी किया। राजतंत्रात्मक व्यवस्था के अनुकूल हर्ष राज्य और शासन का प्रधान था। ह्वेनसांग के अनुसार, हर्ष का समस्त दिन तीन भागों में विभक्त था। दिन का एक भाग प्रशासनिक कार्यों के लिए तथा अन्य दो भाग धार्मिक या जनहित के कार्यों के लिए